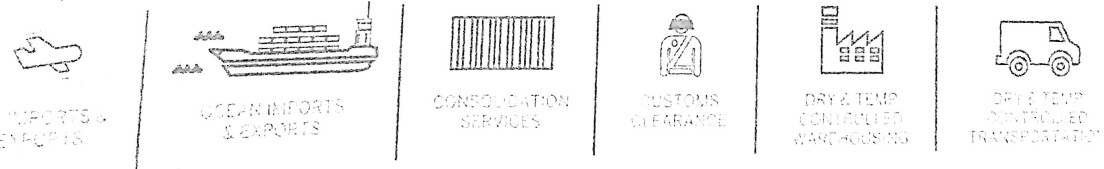


आज का उदाहरण व ले सकते हैं कोरोना
 विमारी इसके बाद कहा जा रहा है
 यह मानव निर्मित जावक दृष्टिभार है
 जा चीन वु के प्रभागशाखा में लंथार
 किया गया है अगर यह सच है तो यह
 मान का तुकपभोग है।

(XXII) आम को देश एवं काल की सिमाओं से परे
 होता है।

(XXIII) मान में समय के साथ बदलाव आता
 है जैसे हमारे सोभे मंडल में लुते
 को गृह में शामिल किया गया
 था लेकिन कुछ वर्षों पूर्व वैमानिकों
 ने इसे सोभे मंडल से निकाल दिया
 क्योंकि यहाँ की मानक पर फीट नहीं
 बैठ रहा था।

(XXIV) मान का परिष्कारित किया जा सकता है।
 इस प्रकार हम देखते हैं मान
 मानक द्वारा ग्रहण किया गया इनमोल
 तन्त्र है जिसे बिना मानक जीवन
 अधुरा है अतः इस जीवन में स्वास्थ के बाद
 मान ही यह बुद्धमूल्य तन्त्र है जिसका बीजा
 रोपण एकान्त किया जाता है और यह सर्पजनिक
 रूप से फलित होता है।



Handwritten signature or scribble at the bottom of the page.

- (XI) ज्ञान व्यक्ति को अधिकार और कर्तव्य के प्रति जागरूक करता है।
- (XII) ज्ञान दूसरों के जीवन को प्रकाशित करता है।
- (XIII) ज्ञान समझ का परिणाम है और समझ के साथ बढ़ता है।
- (XIV) ज्ञान की कोई सीमा नहीं है ज्ञान की बढ़ि को कोई नहीं रोक सकता पर धन बढ़ि की सीमा है।
- (XV) ज्ञान शिक्षा का उत्तम साधन है।
- (XVI) ज्ञान व्यक्ति को जीवन में समाभोजन बना सकता है।
- (XVII) यह व्यक्ति एवं समाज के संवृद्धि तथा विकास में सहायक होता है।
- (XVIII) यह सौतिकता को संतुष्ट करता है इसके मूल मूल हैं स्वयं को जानना।
- (XIX) धन से ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता परन्तु ज्ञान से धन कमाया जा सकता है।
- (XX) अधिक ज्ञान अर्थ है लोकित आत्मा को सुरक्षा रखकर नहीं।
- (XXI) ज्ञान का उपयोग मानव के लिए सहयोगी है और ज्ञान का दुर्व्ययोग मानव के लिए विनाशकारी सिद्ध होता है।



देखते हैं।

ज्ञान की विशेषताएँ :-

- (i) ज्ञान धर्म की तरह है यह मनुष्य को लाजगी बना देता है यह व्यक्ति के पास जितना होता उस व्यक्ति को और अधिक पाने की हलाकत होती है परन्तु धर्म और साम को भेद बड़ा अंतर है धर्मवान व्यक्ति धर्म बोलने में विश्वास नहीं करता परन्तु विद्वान या ज्ञानवान व्यक्ति अपने ज्ञान के पितरण में विश्वास करता है।
- (ii) ज्ञान सत्य तक पहुँचने का साधन है।
- (iii) धर्म की भाँति ज्ञान को भी जानने के लिए अनुभव करना चाहिए।
- (iv) ज्ञान प्रेम तथा मानव स्वतंत्रता के सिद्धान्तों का ही आधार है।
- (v) ज्ञान अपने सीमाओं से परे लक्ष्य विवेकता है।
- (vi) लक्ष्य और मूल्य ज्ञान के ढाँचे का आधार बनते हैं।
- (vii) ज्ञान कभी समाप्त नहीं होता।
- (viii) ज्ञान व्यक्ति को जसवी बनाता है।
- (ix) सूचना ज्ञान का स्वरूप है।
- (x) ज्ञान शक्ति है।



AIR IMPORTS & EXPORTS



OCEAN IMPORTS & EXPORTS



CONSOLIDATION SERVICES



CUSTOMS CLEARANCE



DRY & TEMP CONTROLLED WAREHOUSING









DRY & TEMP CONTROLLED TRANSPORTATION

विशेष की आलग, आलग साधान एवं आवधारण
 हो सकती तथा इन शर्तों में खंडिधता है
 परन्तु कुछ गान असंदिग्ध होते हैं जैसे
 जीवन और मूल्य धान जो जिन्दा है
 वह मरेगा ही, पृथ्वी सूभे परिक्रमा करती
 है यह अकार्बन सत्त्व है अतः यह
 सत्त्व क है परन्तु पृथ्वी इन्चुर्ष लोगों को
 मानना था कि पृथ्वी की परिक्रमा सूभे
 करती है क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था

Will continue next class

इस प्रकार सत्त्व, अकार्ब, ही हमारा गान है
 जो सत्त्व नहीं है उसको सत्त्व सूक्ष्म अम
 कहा जा सकता था मिश्रण है अतः
 दशम के अनुसार आत्म गान है सत्त्व
 गान है जिसमें सूक्ष्म गान धान मन
 की आरवों से देखा जाता है अतः गान 98
 है जो सत्त्व का दशम कशय है, इस प्रकार
 हम देखते हैं सत्त्व कर्ष विशेषताओं की
 होती है जो व्यक्ति को अपने लक्ष्य तक
 पहुँचाने का मार्ग प्रसन्न करती है।
 गान की विशेषताओं को हम निम्न प्रकार

 AIR IMPORTS & EXPORTS	 OCEAN IMPORTS & EXPORTS	 CONSOLIDATION SERVICES	 CUSTOMS CLEARANCE	 DRY & TEMP CONTROLLED WAREHOUSING	 DRY & TEMP CONTROLLED TRANSPORTATION
--	--	---	---	--	---